IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों की उपलब्धि पर अभिभावक भागीदारी के प्रभाव का अध्ययन'' (रायपुर शहर के संदर्भ में)

कुंजबिहारी साहू , डॉ. निहारिका परिहार , डॉ. रिया तिवारी

शोधकर्त्ता , शोध–निर्देषिका , प्राचार्या

पं. रविषंकर शुक्ल विष्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

ग्रेसियस कॉलेज ऑफ एजुकेषन बेलभाठा, अभनपुर, रायपुर(छ.ग.) ,भारत

सारांष :आज षिक्षा का उद्देष्य बालक का सर्वांगीण विकास करना हैं। षिक्षा बालक की अंतर्निहित शक्तियों की खोज करता हैं। मार्गदर्षन एवं प्रषिक्षण के द्वारा उन षक्तियों को विकसित कर बालक को सुंदर एवं संपन्न बनाता हैं। षिक्षा जीवनपर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया हैं अर्थात् व्यक्ति का सम्पूर्ण जीवन ही षिक्षा काल हैं। प्रस्तुत अध्ययन के लिए उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की उपलब्धि पर अभिभावक भागीदारी के प्रभाव का अध्ययन के लिए रायपुर षहर के दो उच्चतर माध्यमिक विद्यालय को लिया गया हैं। जिसमें 30 शासकीय स्कूल के छात्र व छात्राऍं और 30 अशासकीय स्कूल के छात्र व छात्राऍं सम्मिलित हैं। प्रस्तुत अध्ययन के लिए विद्यार्थियों की उपलब्धि मापन हेतु प्रतिभादेव आशामोहन द्वारा निर्मित उपलब्धि मापनी व विद्यार्थियों की अभिभावक भागीदारी मापन के लिए विजयलक्ष्मी चौहान, गुंजन गनोदा अरोरा द्वारा निर्मित अभिभावक भागीदारी मापनी का उपयोग किया गया । सांख्यिकीय गणना के आधार पर ज्ञात हुआ की बालकों की उपलब्धि पर उनके अभिभावक भागीदारी का प्रभाव पड़ता हैं, साथ ही विद्यार्थियों के वातावरण, पारिवारिक वातावरण का प्रभाव पड़ता हैं। उच्च अभिभावक भागीदारी वाले विद्यार्थियों की उपलब्धि उच्च एवं निम्न अभिभावक भागीदारी वाले विद्यार्थियों की उपलब्धि निम्न होती हैं।

प्रस्तावना:षिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया हैं। उसका मूलभूत कार्य व्यक्ति में ऐसे परिवर्तन लाना है, जो सामाजिक विकास एवं व्यक्ति के जीवन को उन्नतषील बनाने की दृष्टि से अनिवार्य हैं। षिक्षा की प्रक्रिया एक बहुतत्वीय प्रक्रिया हैं। उसके अनेक आधारभूत तत्व हैं, सामाजिक, सांस्कृतिक, परिस्थितियां, विद्यालय का वातावरण, पारिवारिक परिस्थितियां, विद्यार्थी एवं उसकी अनेक विषेषताऍं, आदि अनेक चर हैं जो षिक्षा को प्रभावित करते हैं।

बालक प्रत्येक वस्तुओं को अपने दृष्टिकोण से देखता हैं, समझता हैं, तथा जिस वस्तु या विषय के प्रति उसकी रूचि अधिक होती हैं वह उसी क्षेत्र में आगे बढ़ने हेतु अधिक परिश्रम करता हैं। फलस्वरूप उसकी

प्रेरणा उसी क्षेत्र में होती है। तथा उसकी इस उपलब्धि को आगे बढ़ाने में अभिभावक भागीदारी (संलिप्तता) का भी अमूल्य योगदान होता है। यह प्रोत्साहन विभिन्न अभिभावकों से बालकों को मिलता हैं।

मूल षब्दःविद्यार्थी की उपलब्धि , अभिभावक की भागीदारी

उद्देष्य :षोधकर्ता को षोध कार्य करने हेतु अध्ययन का उद्देष्य जानना जरूरी है। यहां अध्ययन के निम्नलिखित उद्देष्य हैं–

1.शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों की उपलब्धि पर अभिभावक की भागीदारी के प्रभाव का अध्ययन .करना।

2.अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत छात्रों की उपलब्धि पर अभिभावक की भागीदारी के प्रभाव का अध्ययन करना।

3.शासकीय व अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं की उपलब्धि पर अभिभावक की भागीदारी के प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ :–प्रस्तुत षोध कार्य में समस्या की सार्थकता के परीक्षण हेतु निम्न परिकल्पनाएँ की गई हैं।

1.परिकल्पना H_1:शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों की उपलब्धि पर अभिभावक की भागीदारी के प्रभाव मैं सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

2.परिकल्पना H_2:अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत छात्रों की उपलब्धि पर अभिभावक की भागीदारी के प्रभाव का अध्ययन मैं सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

3.परिकल्पना H_3:शासकीय व अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं की उपलब्धि पर अभिभावक की भागीदारी के प्रभाव का अध्ययन मैं सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

परिसीमा :प्रस्तुत अध्ययन के लिए रायपुर जिले के दो उच्चतर माध्यमिक विद्यालय को लिया गया हैं।

षोध प्रक्रिया :

षोध विधि :इस अध्ययन में यादृच्छिक विधि का प्रयोग किया गया हैं ।

न्यायदर्ष :अध्ययन क्षेत्र में रायपुर शहर के 2 उच्चतर माध्यमिक विद्यालयो का चयन किया गया है। न्यादर्श के रूप में 60 विद्यार्थियों को लिया गया हैं। जिसमें 30 शासकीय स्कूल के छात्र छात्राएँ और 30 अशासकीय स्कूल के छात्र व छात्राएँ सम्मिलित हैं।

सांख्यिकीय विष्लेषणःपरीक्षण से प्राप्त प्राप्तांको के आधार पर सार्थकता का मान ज्ञात करने के लिए सांख्यिकीय मानों का प्रयोग किया गया हैं। जिसमें मध्यमान, मानक विचलन और 't' मान की गणना की गई।

परिकल्पनाओं की पुष्टि :

परिकल्पना H_1:शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों की उपलब्धि पर अभिभावक की भागीदारी के प्रभाव मैं सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

उपर्युक्त परिकल्पना की जॉच हेतु विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिभावक भागीदारी के मध्यमान मानक विचलन तथा 'टी' के मान की गणना की गई जिसे सारणी क्रमांक – 4.01 में उल्लेखित किया गया हैं।

विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिभावक भागीदारी के मध्यमान, मानक विचलन तथा 'टी'

वर्ग	कुल संख्या N	मध्यमान Mean	प्रमाणिक विचलन SD	'टी' मान
उपलब्धि वाले विद्यार्थी	30	115.53	2.55	0.6854
अभिभावक भागीदारी वाले विद्यार्थी	30	81.9	2.84	
Df = 58				

विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिभावक भागीदारी के मध्यमान, मानक विचलन के लिए ग्राफ

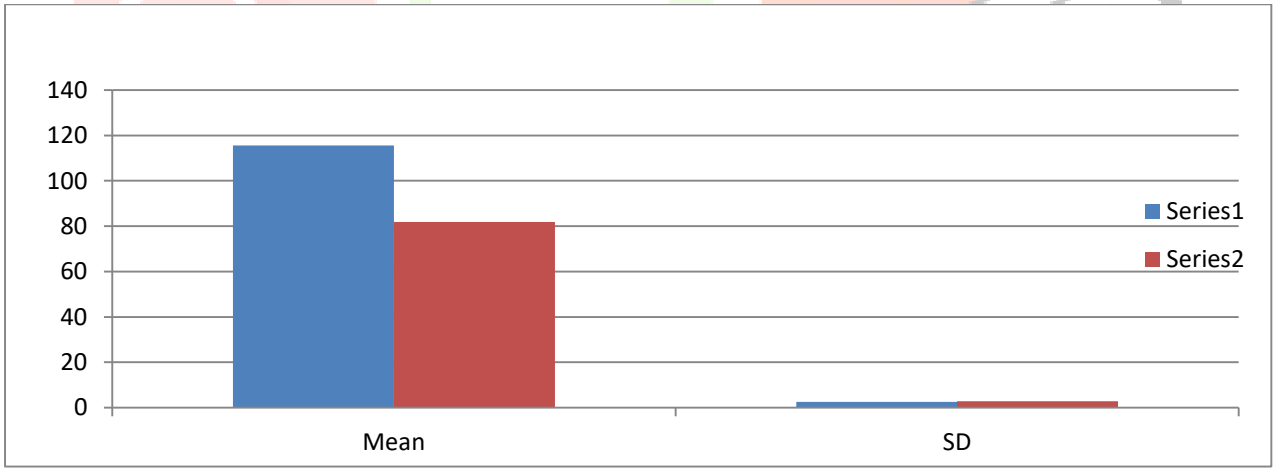

विष्लेषणःउपर्युक्त सारणी का अवलोकन करने से यह स्पष्ट है कि शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के अभिभावक भागीदारी वाले छात्रा एवं छात्रों के उपलब्धि का मध्यमान 115.53 और 81.9 हैं तथा मानक विचलन का मान 2.55 और 2.84 हैं।

व्याख्याःदोनो समूह की तुलना करने के लिए 'टी' के मान की गणना की गई। जो 0.6854 पाया गया। 'टी' के मान की सार्थकता ज्ञात करने के लिए 'टी' मान की सारणी का अवलोकन किया गया जो स्वतंत्रता के अंश 58

के लिए 0.01 सार्थकता स्तर 2.660 पर हैं। चूंकि प्राप्त मान सारणी मान से कम हैं, अतः प्राप्त मान निरर्थक हैं।

निष्कर्षःइस प्रकार स्पष्ट होता हैं कि अभिभवक भागीदारी वाले छात्रा एवं छात्रों की उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जाता हैं। सारणी क्रमांक 4.01 से यह भी स्पष्ट होता हैं कि अभिभावक भागीदारी वाले छात्राओं का मध्यमान अभिभावक भागीदारी वाले छात्रों से कम हैं, अतः स्पष्ट है कि अभिभावक भागीदारी वाले छात्राओं की उपलब्धि निम्न हैं इस प्रकार परिकल्पना क्रमांक $\mathbf{H_1}$स्वीकृत होती हैं।

परिकल्पना $\mathbf{H_2}$:अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत छात्रों की उपलब्धि पर अभिभावक की भागीदारी के प्रभाव का अध्ययन मैं सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

उपर्युक्त परिकल्पना की जॉच हेतु उच्च अभिभावक भागीदारी वाले छात्र–छात्राओं का मध्यमान मानक विचलन तथा 'टी' के मान की गणना की गई जिसे सारणी क्रमांक – 4.02 में उल्लेखित किया गया हैं।

विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिभावक भागीदारी के मध्यमान, मानक विचलन तथा 'टी'

वर्ग	कुल संख्या N	मध्यमान Mean	प्रमाणिक विचलन SD	'टी' मान
उपलब्धि वाले विद्यार्थी	30	115.9	1.93	0.73617
अभिभावक भागीदारी वाले विद्यार्थी	30	80.86	2.43	
Df = 58				

विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिभावक भागीदारी के मध्यमान, मानक विचलन के लिए ग्राफ

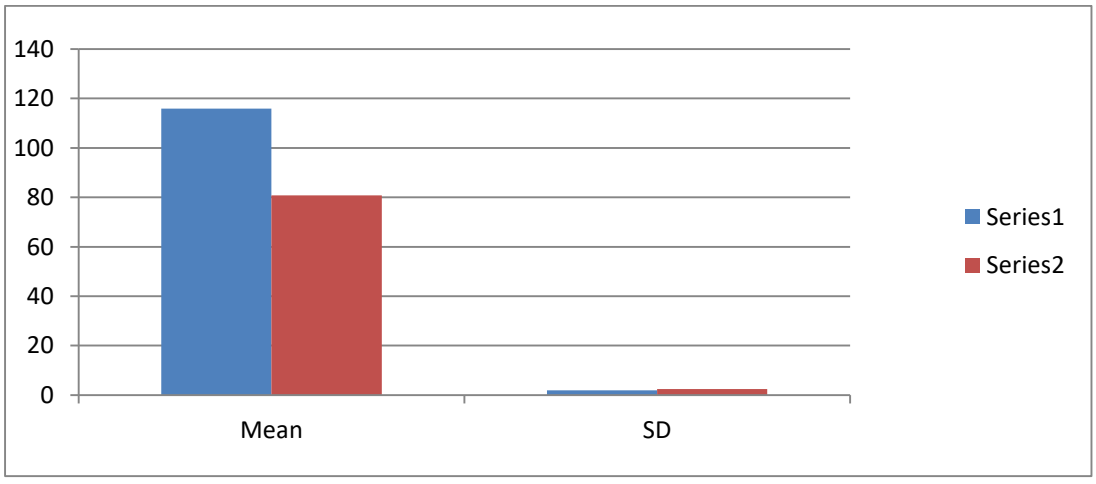

विश्लेषणःउपर्युक्त सारणी का अवलोकन करने से यह स्पष्ट है कि अषासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के कक्षा 11वीं के उच्च अभिभावक भागीदारी वाले छात्र–छात्राओं के उपलब्धि का मध्यमान115.9 और 80.86 हैं तथा प्रमाणित विचलन का मान 1.93 और 2.43 हैं।

व्याख्याःदोनो समूह की तुलना करने के लिए 'टी' के मान की गणना की गई। जो 0.73617 पाया गया। 'टी' के मान की सार्थकता ज्ञात करने के लिए 'टी' मान की सारणी का अवलोकन किया गया जो स्वतंत्रता के अंष 58 में 0.01 सार्थकता स्तर पर हैं। चूंकि प्राप्त मान सारणी मान से कम हैं, अतः प्राप्त मान सार्थक नहीं हैं।

निष्कर्षःइस प्रकार स्पष्ट होता हैं कि उच्च अभिभवक भागीदारी वाले छात्र–छात्रओं की उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता हैं। सारणी क्रमांक 4.02 से यह भी स्पष्ट होता हैं कि उच्च अभिभावक भागीदारी वाले छात्रों का मध्यमान उच्च अभिभावक भागीदारी वाले छात्राओं से अधिक हैं, अतः स्पष्ट है कि उच्च अभिभावक भागीदारी वाले छात्रों की उपलब्धि उच्च हैं इस प्रकार परिकल्पना क्रमांक $\mathbf{H_2}$ निरस्त होती हैं।

परिकल्पना H_3ःशासकीय व अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं की उपलब्धि पर अभिभावक की भागीदारी के प्रभाव का अध्ययन में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

उपर्युक्त परिकल्पना की जॉच हेतु निम्न अभिभावक भागीदारी वाले छात्र–छात्राओं का मध्यमान मानक विचलन तथा 'टी' के मान की गणना की गई जिसे सारणी क्रमांक – 4.02 में उल्लेखित किया गया हैं।

विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिभावक भागीदारी के मध्यमान, मानक विचलन तथा 'टी'

वर्ग	कुल संख्या N	मध्यमान Mean	प्रमाणिक विचलन SD	'टी' मान
उपलब्धि वाले विद्यार्थी	60	115.71	2.55	0.347
अभिभावक भागीदारी वाले विद्यार्थी	60	81.38	2.84	
Df = 118				

विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिभावक भागीदारी के मध्यमान, मानक विचलन के लिए ग्राफ

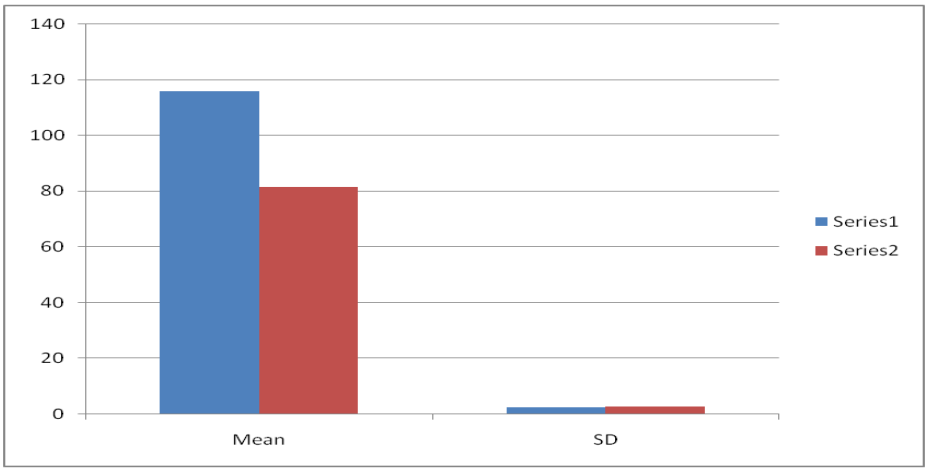

विष्लेषणःउपर्युक्त सारणी का अवलोकन करने से यह स्पष्ट है कि शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के कक्षा 11वीं के निम्न अभिभावक भागीदारी वाले छात्र – छात्राओं के उपलब्धि का मध्यमान 115.71 और 81.38 हैं तथा प्रमाणित विचलन का मान 2.55 और 2.84 हैं।

व्याख्याःदोनो समूह की तुलना करने के लिए 'टी' के मान की गणना की गई। जो 0.347 पाया गया। 'टी' के मान की सार्थकता ज्ञात करने के लिए 'टी' मान की सारणी का अवलोकन किया गया जो स्वतंत्रता के अंष 118 में 0.01 सार्थकता स्तर पर हैं। चूंकि प्राप्त मान सारणी मान से कम हैं, अतः प्राप्त मान सार्थक नहीं हैं।

निष्कर्षःइस प्रकार स्पष्ट होता हैं कि निम्न अभिभवक भागीदारी वाले छात्र–छात्रओं की उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता हैं। सारणी क्रमांक 4.02 से यह भी स्पष्ट होता हैं कि उपलब्धि वाले विद्यार्थी का मध्यमान अभिभावक भागीदारी वाले छात्राओं से अधिक हैं, अतः स्पष्ट है कि अभिभावक भागीदारी वाले छात्रों की उपलब्धि हैं

निष्कर्षःसम्पूर्ण परिकल्पनाओं एवं निष्कर्षो के विवेचना से यह निष्कर्ष निकला हैं कि बालकों की उपलब्धि पर उनके अभिभावक भागीदारी का प्रभाव पड़ता हैं, साथ ही विद्यार्थियों के वातावरण, पारिवारिक वातावरण का प्रभाव पड़ता हैं। उच्च अभिभावक भागीदारी वाले विद्यार्थियों की उपलब्धि उच्च एवं निम्न अभिभावक भागीदारी वाले विद्यार्थियों की उपलब्धि निम्न होती हैं।

सुझाव :

1.अभिभावक ही बालक के प्रथम गुरू होते हैं, अतः अभिभावक का सहयोग बालक हेतु आवष्यक हैं।

2.अभिभावकों का उत्तरदायित्व हैं कि बालकों को आरंभ से ही प्रत्येक क्षेत्र में दिषा निर्देषित करें।

3.अभिभावक की भागीदारी बालकों हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण होती हैं, अतः अभिभावक एवं बालक का संबंध अच्छे रहे।

4.अभिभावक को अपने बालकों को उचित प्रेरणा दिया जाना चाहिए।

5.अभिभावकों को अपने बालकों से अच्छे सामंजस्य स्थापित करना चाहिए।

6.अभिभावक बालक से संबंध अच्छा होगा तो उपलब्धि प्रेरणा भी अच्छी होगी।

7.घर का वातावरण, अभिभावकों का आपसी तालमेल एवं संबंध अच्छा रखना चाहिए।

8.अभिभावक बालकों के प्रेरणा के लिए परामर्ष एवं मार्गदर्षन तथा उचित वातावरण की व्यवस्था करनी चाहिए।

9.बालक की आज की उपलब्धि प्रेरणा कल के राष्ट्र की उपलब्धि हैं, अतः बालक की उपलब्धि प्रेरणा के समुचित विकास की ओर विषेष ध्यान देना अवाष्यक हैं।

10.अभिभावक को अपने बालकों के सर्वांगीण विकास के लिए जीवन के सभी क्षेत्रों में उचित मार्गदर्षन प्रदान करना चाहिए।

संदर्भित ग्रंथ सूची

1. आनन्द, सी.एल.: सेकण्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेषन (1972–1978)
2. कपिल, एच.के. : अनुसंधान विधियॉ, हर प्रसाद भार्गव, आगरा(1984)
3. कुलश्रेष्ठ, एस.पी. : षिक्षा मनोविज्ञान, आर लालबुक डिपो, सूर्या पब्लिकेषन(2006)
4. चौबे, सरयू प्रसाद : षिक्षा के समाजषास्त्रीय आधार, विनोद पुस्तक मंदिर,आगरा(1990)
5. ठाकुर, आर.एस. : सेकण्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेषन(1972–1978)
6. पाण्डेय, के.पी. : शैक्षिक अनुसंधान की रूपरेखा, अमिततारा प्रकाषन,मेरठ(1991)
7. पाठक, पी.डी. : षिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा (1992)
8. पाण्डेय, रामसकल : षिक्षा के मूल सिध्दांत, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा(1995)
9. भटनागर, सुरेष : शैक्षिक अनुसंधान विकास पब्लिषिंग हाउस(1979)
10. माथुर, एम. एस. : षिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर (1981)
11. सक्सेना,एन.आर.स्वरूप : षिक्षा दर्षन, इंटरनेषनल पब्लिषिंग हाउस, मेरठ(1979)
12. शर्मा, एस.एन. : आधुनिक समाज में मनोविज्ञान, हरप्रसाद भार्गव, आगरा(1990)
13. शर्मा, बी.एन. : षिक्षा मनोविज्ञान, साहित्य प्रकाषन, आगरा(1996)
14. सिन्हा, एच.सी. : शैक्षिक अनुसंधान, विकास पब्लिषिंग हाउस(1979)